~~Contemporary~~ Indian philosophy

विनोबा भावे

भूदान (Bhoodan)

भूदान (Bhoodan)

SEMESTER-VI

CORE PAPER - XIII

*** Explain Bhoodan movement and its Ideology?

भूदान आन्दोलन और भूदान विचारधारा की व्याख्या करें।

Ans:- सर्वोदय आर्थिक और राजनीतिक शक्ति का विकेन्द्रीकरण कर प्रेम, सेवा और सहयोग के आधार पर नवीन व्यवस्था की स्थापना करना चाहता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आचार्य विनोबा भावे ने भूदान यज्ञ के मार्ग को अपनाया। भारत में भूदान यज्ञ के द्वारा हम आर्थिक और राजनीतिक दोनों तरह के विकेन्द्रीकरण की ओर इन दोनों प्रकार के केन्द्रीय शक्ति को समाप्त करना चाहते हैं। भूदान यज्ञ के द्वारा हम उत्पादन का मुख्य साधन जमीन सब जनता के हाथ में पहुँचा देते हैं अतः आर्थिक विकेन्द्रीकरण को रोकते हैं यह तो स्पष्ट है परन्तु इससे राजनीतिक सत्ता का भी विकेन्द्रीकरण होता है। यह कार्य यज्ञ में मिली हुई जमीन के बँटवारे को हम हमारे तरीके से और उसके बाद गाँव में जो हम व्यवस्था कायम हुई देखना चाहते हैं उसमें होता है। भूमिदान यज्ञ के द्वारा हम जनता को उसकी सोयी शक्ति [illegible] का जिक्र से भान कराते हैं और उसे बताते हैं कि [illegible] गाँव के सब मामलों का एक समस्या का हल गाँव वाले सब मिलकर कर सकते हैं और उन्हें ऐसा करना चाहिए। भूदान के सम्बन्ध में जय प्रकाश नारायण ने कहा है कि "यह आर्थिक और सामाजिक क्रांति लाने का गाँधीवादी मार्ग है। यह नवीन जीवन का सिद्धान्त और व्यवहार है। यह एक नवीन सामाजिक दर्शन है यह एक नवीन मानवता तथा एक नवीन सभ्यता का सूत्रपात है।" विनोबा जी ने भूदान यज्ञ प्रारम्भ करते हुए कहा था कि "व्यक्तियों के द्वारा। स्वीकार कर लिया जाना चाहिए कि समस्त धरती ईश्वर की है। अगर समस्त धरती पर

सामाजिक कर्म में स्वामित्व हो तो सारा असन्तोष दूर हो जायगा और प्रेम तथा सहयोग के युग का आरम्भ होगा। मैं चाहता हूँ कि व्यक्तियों के द्वारा प्रारम्भ में अपनी भूमि का कुछ भाग दान किया जाये इसके साथ ही उन्हें दूसरे की सेवा के कार्य में लग जाना चाहिए।"

सर्वोदय सम्मेलन और भूदान।—

अप्रैल 1951 में आन्ध्र प्रदेश के शिवराम पल्ली में सर्वोदय सम्मेलन के समय आचार्य भावे तेलंगाना में पोचमपल्ली नामक गाँव पर ठहरे हुए थे। इस समय अनेक हरिजन और अनेक व्यक्ति आचार्य भावे से मिले और उन्हें अपनी भूमिहीनता के कष्ट सुनाए। जब आचार्य भावे को बतलाया गया कि इन निर्धन भूमिहीन व्यक्तियों को 80 एकड़ भूमि की आवश्यकता है तो इन महान नेता ने वहाँ उपस्थित व्यक्तियों से पूछा क्या कोई व्यक्ति इतनी भूमि दान कर सकता है? सर्वोदय नेता की बात का उत्तर पोचमपल्ली के ही श्री रामचन्द्र रेड्डी ने तुरन्त 100 एकड़ भूमि तुरन्त दान दे दिया। इस प्रकार 18 अप्रैल 1951 को भूदान यज्ञ का प्रारम्भ हुआ। इसके बाद पास के ही एक गाँव से 60 एकड़ भूमि प्राप्त हुई। विनोबा जी को इस बात का विश्वास हो गया कि व्यक्तियों के अन्तरआत्मा को परिवर्तित कर अहिंसक ढंग से क्रांति लाई जा सकती है। तेलंगाना में जिसे साम्यवादियों का गढ़ समझा जाता था आचार्य ने 51 दिन में 12201 एकड़ भूमि प्राप्त की।

भूदान के मूल विचार।—

(1) प्रन्यास धारणा।— भूदान सम्पत्ति विरोध तथा भू सम्पत्ति के सम्बन्ध में प्रन्यास धारणा को मानता है। यह विश्वास करता है कि समस्त-

भूमि ईश्वर की है। मानव केवल उस पर प्रन्यासी के रूप में ही अधिकार रखते हैं।

(ii) न्याय और नैतिकता पर आधारित :-

भूदान न्याय पर आधारित है और नैतिकता के सिद्धान्त को अपनाने पर जोर देता है। इसके अन्तर्गत भूमि को दान दया के रूप में नहीं बल्कि हस्तान्तरण किया जाता है कि दया की यह माँग है।

(iii) नवीन दृष्टिकोण :- भूदान को इस मान्यता के साथ अपनाया गया कि यह पुरानी आर्थिक तथा सामाजिक मान्यताओं को परिवर्तित करके उनमें एक नवीन दृष्टिकोण को उत्पन्न करेगा। भूमि निजी सम्पत्ति न होकर सबकी सम्पत्ति होगी। व्यक्तियों का सम्पत्ति स्वामित्व और अहम् की प्रवृत्ति को दूर कर उनका भूदान हृदय परिवर्तित करेगा। एक व्यक्ति को केवल इतनी ही भूमि रखने का अधिकार होगा जितनी की उसे आवश्यकता है। अपनी आवश्यकता से अधिक भूमि उसे समाज को लौटानी होगी।

सम्पत्ति दान :- प्रारम्भ में विनोबा जी नगद धन दान स्वीकार नहीं करते थे। उनका विचार था कि धन अनेक समस्या को जन्म देता है तथा भारत के पतन का कारण रहा है।

ग्रामदान और ग्रामराज्य :-

भूदान के अगले कदम के रूप में विनोबा जी ग्राम दान चाहते हैं। जिसका तात्पर्य है एक पूरे गाँव की भेंट करना। प्रारम्भ में व्यक्ति अपनी भूमि का एक टुकड़ा देंगे। किन्तु अन्त में वे अपनी सारी भूमि दे देंगे।

ग्राम राज्य के लक्षण :-

(1) ग्राम में सहयोग और पारिवारिक भावना :-

जिस प्रकार एक परिवार के

समस्त सदस्य परिवार की उन्नति के लिए कार्य करते हैं। इसी प्रकार ग्राम राज्य के सभी व्यक्ति समस्त समुदाय के कल्याण के लिए कार्य करेगा। प्रत्येक व्यक्ति ग्राम के एक इकाई पर कार्य करेगा।

(ii) **विकेन्द्रीकरण और अहिंसा।**— ग्राम राज्य की प्रकृति वर्तमान समय के राज्य से नितांत भिन्न होगी। ग्राम राज्य में हिंसा और दमन के लिए कोई स्थान नहीं होगा। इसमें गाँवों के माध्यम से शक्ति का विकेन्द्रीकरण होगा। जिसमें प्रत्येक गाँव पूर्ण और अपने आप में एक लघु राज्य हो।

(iii) **शोषण और दलित राजनीति नहीं।**— ग्राम राज्य में निर्बल का सबल के द्वारा शोषण नहीं किया जाएगा। इसमें प्रतिस्पर्धा नहीं वरन पारस्परिक सहयोग एवं समन्वय होगा।

(iv) **स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व।**— ग्राम राज्य में स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व का वातावरण होगा। इसमें राजनीतिक दल, जमींदार या पूंजीपतियों जैसे शोषक वर्ग नहीं होगा।

अन्यदान।— सर्वोदय आन्दोलन के कार्यक्रम के अन्तर्गत भूदान, सम्पत्तिदान, ग्रामदान और ग्रामराज्य के अतिरिक्त बुद्धिदान, साधनदान और जीवनदान आदि को भी अपनाया गया। जीवनदान का तात्पर्य यह है कि जीवनदान करनेवाला व्यक्ति अपनी समस्त बुद्धि श्रम और शक्ति का प्रयोग भूदान एवं सर्वोदय की सेवा में करेंगे। सर्वप्रथम 1954 में जयप्रकाश ने सर्वोदय को अपना जीवनदान किया। तत्पश्चात विनोबा जी ने भूदान यज्ञ मूलक ग्रामदान प्रधान अहिंसक क्रांति के लिए अपना जीवन समर्पण कर दिया। इसी प्रकार उनकी प्रेरणा से अन्य अनेक सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने भी अपना जीवनदान की घोषणा की।